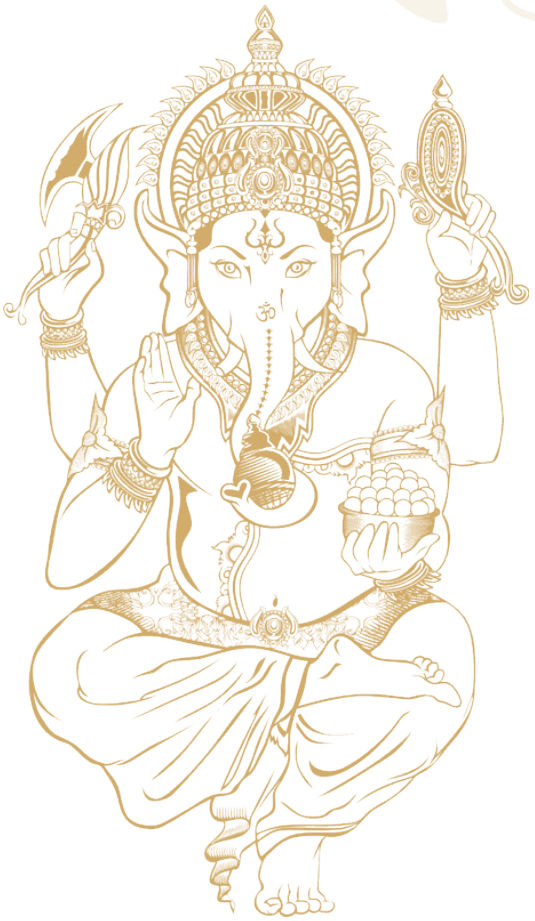

Priyanka

16 May 1993

12:25 PM

Simla

Model: Baby-Horoscope

Order No: 119293901

तिथि 16/05/1993 **समय** 12:25:00 **वार** रविवार **स्थान** Simla **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:46:08
अक्षांश 31:06:00 उत्तर **रेखांश** 77:10:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:20 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	03:39:40 घं
वेलान्तर	00:03:40 घं
सूर्योदय	05:25:33 घं
सूर्यास्त	19:10:15 घं
चैत्रादि संवत	2050
शक संवत	1915
मास	ज्येष्ठ
पक्ष	कृष्ण
तिथि	11
नक्षत्र	पू०भाद्रपद
योग	विष्कुम्भ
करण	बव

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	सिंह
नाड़ी	आद्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सर्प
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	दी-दीप्ति
पाया(रा.-न.)	लौह-लौह
होरा	मंगल
चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी

गुरु 1वर्ष 6मा 23दि
बुध
08/12/2013
09/12/2030

बुध	06/05/2016
केतु	03/05/2017
शुक्र	03/03/2020
सूर्य	08/01/2021
चन्द्र	09/06/2022
मंगल	06/06/2023
राहु	24/12/2025
गुरु	30/03/2028
शनि	09/12/2030

योगिनी

भ्रामरी 0वर्ष 4मा 21दि
धान्या
06/10/2022
06/10/2025

धान्या	05/01/2023
भ्रामरी	07/05/2023
भद्रिका	06/10/2023
उल्का	06/04/2024
सिद्धा	05/11/2024
संकटा	07/07/2025
मंगला	06/08/2025
पिंगला	06/10/2025

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			06:06:53	सिंह	मघा	2	केतु	राहु	---	0:00			
सूर्य			01:39:05	वृष	कृतिका	2	सूर्य	गुरु	शत्रु राशि	2.09	कलत्र	पितृ	साधक
चंद्र			02:01:45	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	1.05	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल			15:20:30	कर्क	पुष्य	4	शनि	गुरु	नीच राशि	1.29	अमात्य	भ्रातृ	सम्पत
बुध		अ	01:51:31	वृष	कृतिका	2	सूर्य	गुरु	मित्र राशि	1.00	ज्ञाति	ज्ञाति	साधक
गुरु	व		11:21:48	कन्या	हस्त	1	चंद्र	मंगल	शत्रु राशि	1.01	भ्रातृ	धन	वध
शुक्र			18:59:04	मीन	रेवती	1	बुध	केतु	उच्च राशि	1.13	आत्मा	कलत्र	विपत
शनि			06:03:08	कुंभ	धनिष्ठा	4	मंगल	चंद्र	मूलत्रिकोण	1.41	मातृ	आयु	मित्र
राहु	व		18:32:15	वृश्चि	ज्येष्ठा	1	बुध	बुध	शत्रु राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु	व		18:32:15	वृष	रोहिणी	3	चंद्र	बुध	सम राशि		---	मोक्ष	वध

लग्न-चलित

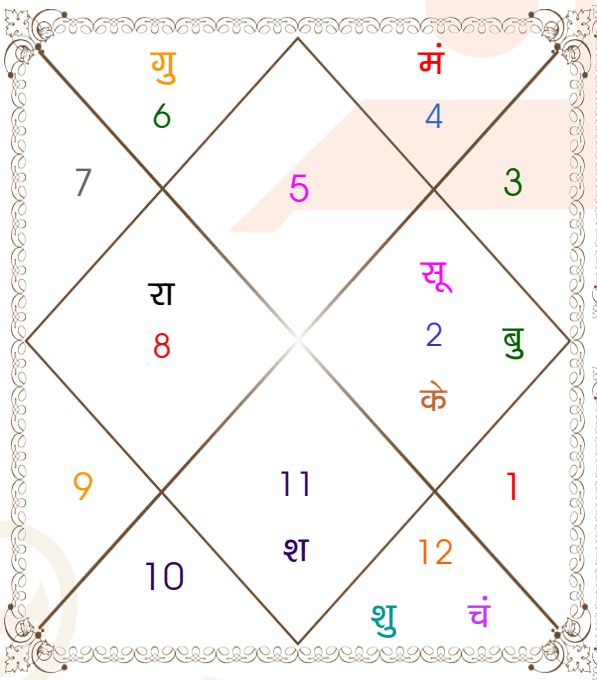

चन्द्र कुंडली

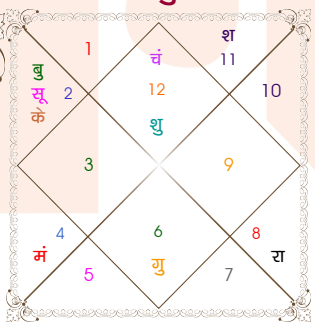

नवमांश कुंडली

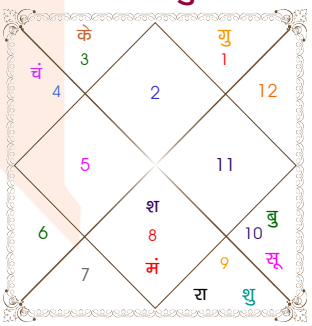

सर्वाष्टकवर्ग

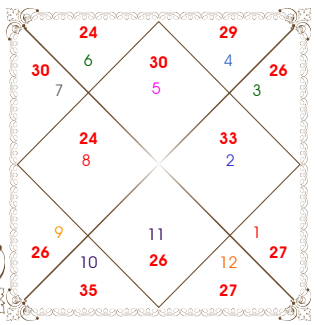

दशमांश कुंडली

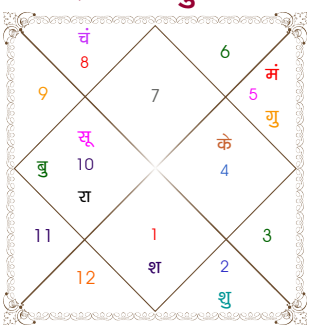

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com

नक्षत्रफल

आप पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुई हें। अतः आपकी जन्म राशि मीन तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि सिंह, वर्ण विप्र, गण मनुष्य, वर्ग सर्प तथा नाड़ी आद्य होगी। नक्षत्र के चतुर्थ चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "दि" या "दी" अक्षर से होगा यथा- दिव्या, दीप्ति आदि।

आप एक संयमशील महिला होंगी तथा अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण रूप से नियंत्रण रख कर संयमपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी। साथ ही नाना प्रकार के कार्यों को करने तथा कलाओं को सम्पन्न करने में भी आप निपुण रहेंगी। इससे आप समाज में आदरणीया रहेंगी। शत्रुओं को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगी एवं वे भी आपसे हमेशा भयभीत रहेंगे तथा आपका विरोध करने में सर्वथा असमर्थ रहेंगे इसके साथ ही आपकी बुद्धि तीक्ष्ण रहेगी एवं आपके समस्त कार्य बुद्धिमता पूर्ण ढंग से सम्पन्न होंगे जिससे आपको जीवन में सुख एवं प्रसन्नता की अनुभूति होगी।

जितेन्द्रियः सर्वकलासु दक्षो जितारिपक्षः खलु यस्य नित्यम्।
भवेन्मनीषा सुतरामपूर्वा पूर्वादिका भाद्रपदा प्रसूतौ।।
जातकाभरणम्

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक जितेन्द्रिय, समस्त कलाओं में निपुण, शत्रुपक्ष को जीतने वाला तथा बुद्धिमान होता है।

आप के पति पूर्ण रूप से आपके वश में रहेंगे तथा सांसारिक कार्यों को आपके कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। इस विषय में स्वतंत्र निर्णय लेने में वे प्रायः असमर्थ ही रहेंगे। आप धन सम्पत्ति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी एवं एक धनवान महिला के रूप में ख्याति अर्जित करेंगी। साथ ही इस धन का जीवन में सुखपूर्वक उपभोग भी करेंगी। आप एक उच्च कोटि की विदुषी भी होंगी एवं नाना प्रकार के शास्त्रों का परिश्रम पूर्वक ड़ान प्राप्त करेंगी। साथ ही आप एक चतुर महिला भी होंगी। आप में कृपणता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

भाद्रपदासूद्विग्नः स्त्रीजितधनी पटुरदाता च।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य हृदय से दुःखी, स्त्री के वश में रहने वाला, धनवान चतुर पीड़ित तथा कृपण स्वभाव का होता है।

आप की वाणी साहसिक तथा ओजस्वी रहेगी अतः अन्य सभी लोग आपकी वाणी से प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथोचित सम्मान भी प्रदान करेंगे इसके साथ ही आप प्रायः भय से भी त्रस्त रहेंगी एवं इससे व्याकुल भी रहेंगी। लेकिन समाज में अन्य जनों से आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही मधुर एवं स्नेहशील रहेंगे।

पूर्वप्रोष्ठपदि प्रगल्भवचनो धूर्तोभयार्तो मृदुः।।
जातक परिजातः

अर्थात् पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में पैदा होने वाला पुरूष साहस एवं ओजस्वी वाणी बोलने वाला, धूर्त, भय से व्याकुलता प्राप्त करने वाला तथा मृदुस्वभाव का होता है।

आप एक उच्च कोटि की वक्ता होंगी एवं अपने ओजस्वी वक्तव्यों से समाज के सभी वर्गो को प्रभावित करने में सफलता प्राप्त करेंगी तथा उनके मध्य लोकप्रिय भी रहेंगी। आपको जीवन में आवश्यक सुखसंसाधन उपलब्ध रहेंगे एवं आनन्द पूर्वक आप इनका उपभोग भी करेंगी। साथ ही आप परिवार से भी युक्त रहेंगी लेकिन आपको नींद अधिक मात्रा में आएगी अतः कभी कभी आप में आलस के भाव की प्रवलता हो जाएगी जिससे आप किसी भी कार्य को करने में असमर्थ रहेंगी या आप प्रमादवश किसी कार्य को करने की इच्छा नहीं रहेंगी।

वक्ता सुखीप्रजायुक्तो बहुनिद्रोनिरर्थकः।
पूर्वभाद्रपदायां च जातो भवति मानवः।।
मानसागरी

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक श्रेष्ठ वक्ता, सुखी, सम्मान वाला, अधिक नींद वाला तथा स्वयं किसी कार्य के योग्य नहीं होता है।

आप जन्म के समय लौहपाद में उत्पन्न हुई हैं। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से युक्त रहता हैं। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति अत्यन्त ही शुभ राशि में है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की ही प्राप्ति अधिक मात्रा में होगी आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमती महिला होंगी तथा धन सम्पत्ति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी। आपकी आयु पूर्ण आयु रहेगी तथा जीवन में समस्त सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप यत्न पूर्वक सफल रहेंगी। साथ ही आनन्द पूर्वक इसका उपभोग करेंगी। लेकिन स्वास्थ्य से आप मध्यम रहेंगी एवं समय समय पर श्वास कफादि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगी। कुल मिलाकर आपका सामान्य जीवन प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

मीन राशि में जन्म होने के कारण आपका शारीरिक सौन्दर्य सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा। आपका ललाट विस्तृत तथा नाक ऊंची रहेगी। आपकी आखें भी अत्यन्त ही सुन्दर होगी एवं उनमें पूर्ण आकर्षण भी विद्यमान रहेगा। आपके शरीर के सभी अंग सुडौल एवं पुष्टता से युक्त रहेंगे। आपकी कमर भी पतली रहेगी। शिल्प या चित्रकारी के प्रति आपकी विशेष रूचि रहेगी एवं परिश्रम पूर्वक इसमें आप सफलता तथा ख्याति भी अर्जित कर सकेंगी। आपके शत्रु हमेशा आपसे भयभीत रहेंगे एवं उनको पराजित करने में आप हमेशा सफल रहेंगी। आप विविध प्रकार के शास्त्रों का विस्तृत ज्ञान प्राप्त करेंगी एवं समाज में एक विदुषी के रूप में आपकी ख्याति रहेगी। साथ ही संगीत शास्त्र के प्रति भी आप की नैसर्गिक रूचि रहेगी। आप धार्मिक कृत्यों का नियम पूर्वक पालन करने के लिए भी सर्वदा तत्पर रहेंगी। पुरूष वर्ग में भी आप

लोकप्रिय एवं आदरणीय रहेंगी। आप अपने सम्भाषण में मधुर वाणी का भी उपयोग करेंगी तथा जीवन में सम्पूर्ण सुख संसाधनों से युक्त रहकर सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगी। क्रोध का भाव आप में अल्प रूप में ही रहेगा जिसका यदा कदा आप प्रदर्शन करती रहेंगी। आप राजकीय सेवा को भी प्राप्त करेंगी तथा खान से उत्पन्न द्रव्यों से आप आजीविकार्जन तथा धन लाभ अर्जित करेंगी। आपके पति पूर्ण रूप से आपके वश में रहेंगे एवं आपके कथनानुसार ही आवश्यक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आपका स्वभाव सुन्दर एवं मैत्रीपूर्ण रहेगा अतः सभी लोगों से आपके अच्छे संबंध रहेंगे। आप समुद्री जहाज या नाव आदि की सैर करने में भी रूचि रखेंगी तथा इससे प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। इसके अतिरिक्त आप में दानशीलता की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा जीवन में यथाशक्ति इस प्रवृति का अनुपालन भी करती रहेंगी।

शिल्पोत्पन्नाधिकरोळहितजयनिपुणः शास्त्रविच्चारुदेहो।
गेयज्ञो धर्मनिष्ठो बहुयुवतिरतः सौख्यभाक् भूपसेवी।।
ईष्टत्कोपो महत्कः सुखनिधिधनभाक् स्त्रीजितः सत्स्वभावो।
यानासक्तः समुद्रे तिमियुगलगते शीतगौ दानशीलः।।
सारावली

आप जल या समुद्र में पाए जाने वाले मोती, शंख तथा अन्य रत्नों से धनार्जन करने में भी सक्षम रहेंगी। इसके साथ ही आपको जीवन में किसी अन्य व्यक्ति संबंधी या मित्र की धन सम्पत्ति भी प्राप्त होगी एवं सुखपूर्वक आप इसका उपभोग करेंगी। सुन्दर वस्त्रों को पहनने की आपके मन में तीव्र लालसा रहेगी एवं इसको प्राप्त करने के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपकी शारीरिक कद की ऊँचाई भी मध्यम रहेगी।

जलपरधनभोक्ता दारवासोळनुरक्तः।
समरूचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।
अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारुदृष्टिः।
द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्यराशौ।।
बृहज्जातकम्

आप जल पीने की बार बार इच्छा प्रदर्शित करती रहेंगी। आपका अपने पति के प्रति पूर्ण आदर तथा विश्वास रहेगा एवं उनसे आप पूर्ण सन्तुष्टि प्राप्त करेंगी। आप में उच्च कोटि के विदुषियों के गुण भी विद्यमान रहेंगे। साथ ही आप अन्य जनों के उपकार को स्वीकार करेंगी एवं उनके प्रति हार्दिक कृतड़ता का भाव प्रकट करेंगी। अतः अन्य लोग आपके सद्गुणों से प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथोचित आदर सत्कार प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी एवं जीवन में कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में भाग्यबल से ही सफलता अर्जित करेंगी।

अत्यम्बुपानः समचारुदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।
विद्वान्कृतज्ञो ळमिभवत्यळमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोळन्त्यराशौ।।
फलदीपिका

आप इन्द्रियों पर नियंत्रण करने में पूर्ण रूप से समर्थ रहेंगी तथा संयमपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी। इसके अतिरिक्त कई प्रकार के अच्छे गुणों से भी आप सुसम्पन्न रहेंगी एवं उनका पालन करने में भी तत्पर रहेंगी। आप एक चतुर तथा बुद्धिमान महिला होंगी एवं अपने सभी महत्वपूर्ण कार्यों को चतुराई तथा बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। साथ ही जलक्रीड़ा करने में आप अत्यन्त ही आनन्द की अनुभूति प्राप्त करेंगी। आपकी बुद्धि सरल एवं स्वच्छ रहेगी एवं इसमें छल या प्रपंच का सर्वथा अभाव रहेगा।

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः।
विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः।।
जातकाभरणम्

आप हमेशा उदर भरण के कार्यों में ही अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगी एवं कभी कभी आपके लाभमार्गो में भी रूकावट आएगी जिसमें आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। आपकी शारीरिक कान्ति अत्यन्त ही दर्शनीय रहेगी अतः इससे आपके सौन्दर्य एवं आकर्षण में निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। पिता से प्राप्त धन से आप युक्त रहेंगी एवं प्रसन्नतापूर्वक इसका अपने जीवन काल में उपभोग भी करेंगी। आप एक साहसी महिला होंगी तथा साहसिक एवं शौर्य युक्त कार्यों को करने के लिए सर्वदा उद्यत रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपके मन में सन्तुष्टि का भाव भी विद्यमान रहेगा एवं जो कुछ भी आप के पास उपलब्ध हो उसी पर सन्तोष करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोळप्रशस्तः।
उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो डध्यः।।
अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारूकान्तिः।
पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः।
तुष्टः साहसी क्रोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप गम्भीर प्रवृति की महिला होंगी तथा शौर्यादि गुणों से हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी। आपका समाज के कभी वर्गों में पूर्ण प्रभुत्व भी स्थापित रहेगा एवं सभी लोग आपको गणमान्य समझकर आपका सम्मान करेंगे। लेकिन आप में कंजूसी का भाव भी रहेगा। अतः धन संचय के प्रति आपकी विशेष रूप से प्रवृति रहेगी। आप एक गुणवती महिला होंगी एवं अपने कुल या परिवार में प्रिय एवं श्रेष्ठ समझी जाएंगी। साथ ही सेवा कार्यों में भी आपकी अभिरूचि रहेगी तथा नित्य सेवा कार्यों के लिए तत्पर एवं उद्यत रहेंगी। आपकी गमन गति तीव्र रहेगी एवं आचरण भी श्रेष्ठ रहेगा जो अन्य जनों के लिए प्रशंसनीय तथा अनुकरणनीय रहेगा इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग से आप पूर्ण स्नेह तथा सम्मान भी अर्जित करेंगी।

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।
कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।
नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधंर्वकुशलः शुभः।।
मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।

मानसागरी

आप अत्यन्त ही आकर्षक व्यक्तित्व की महिला होंगी तथा विभिन्न प्रकार के शास्त्रों में पांरगत रहेंगी।

मीनस्थे मृगलाञ्छने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।
जातक परिजातः

मनुष्य गण में उत्पन्न होने के कारण आप धार्मिक प्रवृति से युक्त महिला रहेंगी एवं देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सेवा का भाव रहेगा। लेकिन कभी कभी आप अपनी अभिमानी प्रवृति का भी अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगी आप के मन में दया का भाव भी रहेगा एवं दीन दुखियों के प्रति आप अवसरानुकूल अपनी इस प्रवृति का भी पालन करती रहेंगी। आप में शारीरिक बल पूर्ण रूप से विद्यमान रहेगा तथा आपके अधिकांश कार्य स्वभुजबल से ही सम्पन्न होंगे। आप कई प्रकार की कलाओं तथा कार्यों को करने में भी निपुण रहेंगी एवं समाज में पूर्ण रूप से आदरणीय रहेंगी। साथ ही आपकी शारीरिक कान्ति भी सुन्दर एवं दर्शनीय रहेगी इसके अतिरिक्त आप परिवार के साथ ही अन्य कई व्यक्तियों को भी सुख प्रदान करने वाली होंगी।

आप समाज में सर्वदा आदरणीया एवं सम्माननीया रहेंगी तथा धनैश्वर्य से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी एवं सुखपूर्वक इसका उपभोग भी करेंगी। आपकी आखें बड़ी होंगी तथा निशाने बाजी की कला में आप अत्यन्त ही निपुण रहेंगी एवं इसमें विशेष योग्यता तथा यश भी प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त समाज के सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपका हार्दिक सम्मान करेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

सिंह योनि में उत्पन्न होने के कारण आप पूर्ण रूप से धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी एवं सदैव धार्मिक प्रवृतियों का नियमपूर्वक अनुपालन करती रहेंगी। आप सत्कार्यों को करने के लिए हमेशा रूचिशील रहेगी एवं प्रयत्नपूर्वक इनको सम्पन्न करेंगी जिससे अन्य लोग भी आपके कार्यों से लाभान्वित होंगे। आप एक सत्वगुण सम्पन्न महिला होंगी एवं इनके अनुपालन में सर्वदा तत्पर रहेंगी एवं समाज में पूर्ण यश तथा सम्मान भी प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त परिवारिक समृद्धि तथा उन्नति के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी एवं इसकी उन्नति में आप का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा जिससे सभी परिवारिक जन आपको विशिष्ट सम्मान प्रदान करेंगे।

स्वधर्मे तु सदाचारसत्क्रियासद्गुणान्वितः।
कुटुम्बस्य समुद्धर्ता सिंहयोनिभवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् सिंहयोनि में उत्पन्न जातक अपने धर्म में सच्चा आचार-व्यवहार वाला, अच्छी क्रिया एवं अच्छे गुणों से सम्पन्न और परिवार का उद्धार करता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से परेशानी उत्पन्न होती रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति का भी उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको सर्वप्रकार से वे आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उनके द्वारा आपको विशेष धन की प्राप्ति भी हो सकती है।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रहेगा एवं उनका कहना मानने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। उनकी सेवा करना तथा वांछित सहयोग प्रदान करना आप अपना नैतिक कर्तव्य समझेंगी। आप के मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा फिर भी आपसी संबंध सामान्य ही समझें जाएंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा आपके प्रति उनके मन में सम्मान तथा स्नेह का भाव रहेगा। जीवन में उनसे आप पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य क्षेत्र में वांछित सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। साथ ही सुख दुःख में भी आपको उनसे पूर्ण सहानुभूति तथा वांछित सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा तथा आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह कुछ समय तक रहेगी। इसके साथ ही आप सुख

दुःख में उन्हें अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपके लिए फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी तथा पौर्णमासी तिथियां, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग, विष्टिकरण, शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियों, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग तथा विष्टिकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर एवं कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी सावधानी रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा माता की श्रद्धापूर्वक उपासना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से वृहस्पतिवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, पीत पुखराज, पीत वस्त्र, हल्दी, पीत चन्दन, चने की दाल आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान करना चाहिए इसके साथ ही वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी योग्य विद्वान द्वारा सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी एवं अन्यत्र सर्वप्रकार से शुभ फलों की वृद्धि होकर लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com